आश्वमेधिकपर्व कथासार

आश्वमेधिकपर्व में ९२ अध्याय, ४१२५ श्लोक हैं।

आश्वमेधिकपर्व में अश्वमेधपर्व, अनुगीतापर्व नामक दो उपपर्व हैं। अनुगीतापर्व के अन्त में अधिकपाठ में वैष्णवधर्मपर्व नामक और एक उपपर्व है।

युद्ध में मरे भीष्म आदि को धृतराष्ट्र ने जलाञ्जलि दिया। उसे आगे करके धर्मराज जल से बाहर निकला। उस समय युधिष्ठिर विवश होकर भूमि पर गिर पडा, श्रीकृष्ण की प्ररेणा से भीमसेन ने उसे पकड लिया। राजा की दीनावस्था को देखकर पाण्डव शोकसागर में डूब गये। युधिष्ठिर को आश्वासन देते हुए धृतराष्ट्र ने कहा कि हे कुन्तीपुत्र! तुम ने क्षत्रियधर्म के अनुसार इस पृथ्वी पर विजय पायी है। शोक मत करो। तुझे शोक करने का कोई कारण नहीं है। शोक तो मुझे और गान्धारी को करना चाहिये। महात्मा विदुर ने जो कुछ हित वचन कहा उसे नहीं सुना। विदुर ने अपनी दूरदृष्टि से पहले ही कहा कि दुर्योधन के दुर्व्यवहार से सारा कुरुवंश नष्ट हो जायेगा। वंश की रक्षा के लिये दुर्योधन को मार डालिये। द्यूतविषयक संगठन को भी रोकने का उपदेश दिया। धर्मपूर्वक पालन के लिये धर्मराज को राज्याभिषिक्त करने का सलाह दी। लेकिन ऐसा कहने पर भी मैं ने पापी दुर्योधन का ही अनुसरण किया। इसका फल अब मैं भोग रहा हूँ। हम सौ पूत्रों को खो चुके हैं। एक भी नहीं बचा। तुझे शोक करने का औचित्य मैं नहीं देख पाता हूँ। कृष्ण भी धर्मराज को समझाया। उसने कहा कि हे धर्मराज! शोक मत कीजिए। आपने भीष्म, व्यास, नारद आदि से सारे धर्मों का उपदेश सुना। महाराज! शोक छोडिये। युद्ध में मारे गये लोग फिर नहीं आ सकते। उन्हें नहीं देख सकते। श्रीकृष्ण के वचन सुनकर युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से कहा कि हे गोविन्द! मैं क्रूरतापूर्वक पितामह भीष्म, द्रोण, कर्ण को मरवाकर कभी शान्ति नहीं पा सकता। मुझे तपोवन जाने की आज्ञा दीजिए। श्रीकृष्ण ने फिर उसे समझाया।

महर्षि व्यास ने उपदेश दिया कि हे धर्मराज! मनुष्य ईश्वर से प्रेरित होकर ही भले बुरे काम करता है। युद्धरूप पाप कर्म का मुख्य हेतु आप को ही मानते तो उस पाप का निवारणोपाय बताता हूँ सुनो। मनुष्य तप, यज्ञ, दान के द्वारा अपने पापों का निवृत्ति कर सकते हैं। हे नरेश! तुम राजसूय, अश्वमेध, सर्वमेध, और नरमेध यज्ञ करो। महर्षि के वचन सुनकर धर्मराज ने कहा कि महर्षि! मेरे पास धन नहीं होने से दान देने में मैं असमर्थ हूँ। उस के वचन सुनकर व्यास ने धनसङ्ग्रह का उपाय बताते हुए मरुत्त की कथा सुनायी। मरुत्त नामक धर्मपरायण राजा ने हिमालय के उत्तर भाग में मेरुपर्वत के निकट यज्ञशाला बनवाकर वहाँ विधिपूर्वक यज्ञ किया। उसमें मरुत्त ने दक्षिणा के रूप में बाह्मणों को भूरि धन दे दिया। ब्राह्मणों के ले जाने से जो धन बच गया उसे वहाँ कोशागार बनवाकर उसी में जमा किया। हे राजन्! तुम उसी धन को संग्रह करके यज्ञ का अनुष्ठान करो। मरुत्तराट्चरित में महादेवस्तुति भी उल्लेखनीय अंश है।

भगवान् श्रीकृष्ण, महर्षि वेदव्यास आदि के समझाने बुझाने पर धर्मराज का मन शान्त हुआ। भीष्म आदि का और्ध्वदैहिक क्रिया की समाप्ति के बाद युधिष्ठिर ने धृतराष्ट्र के साथ हस्तिनापुर में प्रवेश किया। उसने धर्मपूर्वक राज्यपालन करने लगा। हस्तिनापुर में रहने का
प्रयोजन सिद्ध होने से भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से द्वारका चले जाने का प्रस्ताव किया। अनिच्छा से ही अर्जुन ने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया।

अनुगीतापर्व

जब भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन से द्वारका जाने का प्रस्ताव किया तब अर्जुन ने श्रीकृष्ण से पूछा कि हे माधव! संग्राम के समय आप ने जो ज्ञानोपदेश किया वह सब कुछ अब नष्ट हो गया। मेरे मन में फिर उन विषयों के सुनने की उत्कण्ठा हो रही है। इसलिये पुनः गीता विषय सुना दीजिए। श्रीकृष्ण ने कहा कि निश्चय ही तुम बडे श्रद्धाहीन हो। इसलिये उस उपदेश को याद नहीं रखा। यह मुझे बहुत अप्रिय है। उस उपदेश को ज्यों का त्यों अब नहीं कह सकता फिर भी उसके ज्ञान के लिये एक प्राचीन इतिहास का वर्णन करता हूँ। मेरी सारी बातें ध्यान देकर सुनो। ऐसा कहकर गीता को सुनाया। गीता के अनुसरण करके कहने से इसे अनुगीता कहते हैं। इसमें ३६ अध्याय हैं। सिद्ध, महर्षि तथा काश्यप का संवाद के द्वारा जीव की उत्पत्ति, धर्मकार्य, उनका फल, संसार से तरने का उपाय बताया। गुरुशिष्य संवाद के द्वारा मोक्षप्राप्ति का सुलभोपाय कह दिया। एक ब्राह्मण ने अपनी पत्नी के पूछने पर ज्ञानमार्ग का महत्त्व बताया। उसे ब्राह्मणगीता कहते हैं। श्रीकृष्ण ने इसको सुनाया। ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि इस लोक में कोई मुहूर्त काल भी बिना कर्म किये नहीं रह सकता। यदि ज्ञानमार्ग को छोडकर कर्म मार्ग को ही अपनाते हैं तो वे लोग कर्म के द्वारा मोह का ही संग्रह करते हैं। जितेन्द्रिय विद्वान् योगमार्ग से नित्यपरब्रह्म की उपासना करते हैं। उसी से ही प्राण, अपान आदि पाँच प्राणवायु प्रकट होते हैं। फिर उसी में प्रविष्ट हो जाते हैं। ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से कहा कि मैं अकर्मण्य नहीं हूँ। दस इन्द्रियरूपी होता, दस देवतारूपी अग्नि में, दस विषय रूपी हविष्य एवं समिधाओं का हवन करते हैं। शरीर के भीतर इस तरह निरन्तर यज्ञ चल रहा है। इस सन्दर्भ में ब्राह्मण ने नासिका, नेत्र आदि सप्त होताओं के यज्ञविधान भी बताया। प्राण, अपान आदि पाँच प्राणवायुओं का संवाद तथा सबकी श्रेष्ठता बताया, परशुराम के क्षत्रिय कुल संहार का प्रस्ताव किया। अलर्क नामक राजर्षि के ध्यानयोग का वर्णन करके पितामहों ने परशुराम को समझाने पर उसने कठोर तपस्या करके दुर्लभ सिद्धि को प्राप्त किया। ब्राह्मणरूपधारी धर्म और राजा जनक के संवाद के द्वारा ममता का त्याग करने का उपदेश दिया।

श्रीकृष्ण स्वयं अर्जुन के प्रति मोक्षधर्म का उपदेश किया। सत्वगुण, रजोगुण और तमोगुण के कार्य और उनके जानने का फल कह दिया। महत्तत्त्व तथा परमात्मतत्त्व को वर्णन करके निवृत्तिमार्ग का उपदेश किया। ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ, सन्यास नामक चार आश्रम के धर्मों का वर्णन किया। श्रीकृष्ण ने कहा

कि बुद्धिमान् पुरुष देहरूपी वृक्ष को तत्त्वज्ञानरूप खड्ग से काटकर बन्धनों से विमुक्त होकर मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। ऋषि और ब्रह्माजी के संवाद के द्वारा धर्मस्वरूप तथा अविनाशी परमात्मा के प्राप्ति का उपाय बताया। ज्ञानमार्ग की प्रशंसा करके श्रीकृष्ण ने अनुगीता का उपसंहार किया।

श्रीकृष्ण अर्जुन के साथ हस्तिनापुर चला। युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर भगवान् श्रीकृष्ण सुभद्रा को रथ पर बिठकार द्वारका की ओर निकला। बीच में श्रीकृष्ण ने उत्तङ्क ऋषि का दर्शन किया। कौरव पाण्डवों के क्षेमसमाचार पूछने पर श्रीकृष्ण ने युद्ध में कौरवों के नाश को
बताया। यह सुनकर ऋषि क्रोध में भरकर शाप देने को तैयार हुआ। यथार्थस्थिति का वर्णन करके श्रीकृष्ण ने उत्तङ्क को शान्त किया। मुनि की प्रार्थना से भगवान् ने विश्वरूप दिखाया और मरुभूमि में जल प्राप्त होने का वरदान भी दिया। इस संदर्भ में उत्तङ्क का विद्याभ्यास, गुरुभक्ति, गुरुपुत्री के साथ उसका विवाह गुरुपत्नी की आज्ञा से दिव्यकुण्डल लाना आदि विषयों का भी वर्णन किया।

श्रीकृष्ण द्वारका पहुँचकर पिताजी को महाभारत युद्ध की घटना सुनायी। सुभद्रा के कहने पर अभिमन्यु वध का वृत्तान्त भी सुनाया। वसुदेव आदि यादवों ने अभिमन्यु के लिये श्राद्धकर्म संपन्न किये। व्यासमहर्षि ने अर्जुन को समझा बुझाकर, राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करने के लिये आज्ञा देकर वहाँ से अदृश्य हो गये। महर्षि की आज्ञा के अनुसार अश्वमेधयाग करने का निश्चय करके धनसंग्रह के लिये हिमालय पहुँचकर विधिपूर्वक परमेश्वर की पूजा करके धनराशि को खुदवाकर अपने साथ ले आया। श्रीकृष्ण भी अश्वमेध में भाग लेने के लिये वृष्णिवंशियों के साथ हस्तिनापुर आया। ब्रह्मास्त्र से पीडित होने के कारण उत्तरा के गर्भ से चैतन्यहीन बालक (परीक्षित्) उत्पन्न हुआ। कुन्ती की प्रार्थना से श्रीकृष्ण ने उस मृत बालक को जीवनदान दिया। उस का परीक्षित् नामकरण किया।

भगवान् श्रीकृष्ण और व्यासमहर्षि की आज्ञा से यज्ञ का आरंभ हुआ। यज्ञाश्व की रक्षा के लिये अर्जुन की, राज्य और नगर की रक्षा के लिये भीमसेन और नकुल की, कुटुम्बपालन के लिये सहदेव की नियुक्ति हुई। सेना के साथ अर्जुन ने यज्ञाश्व का अनुसरण किया। उस का त्रिगर्तों के साथ घोर युद्ध हुआ। अन्त में अर्जुन ने उनको पराजित किया। इस प्रकार यज्ञाश्व के साथ घूमते हुए मणिपुर नरेश के राज्य पहुँचा। अपने पिताजी के आने का खबर जानकर चित्राङ्गदा के पुत्र बभ्रुवाहन उनके दर्शन के लिये धन के साथ नगर से बाहर निकला। लेकिन अर्जुन ने क्षत्रियधर्म को अपनाकर युद्ध करने को उसे ललकारा। बभ्रुवाहन की विमाता नागकन्या उलूपी ने पिता के साथ युद्ध करने का प्रोत्साहन दिया। दोनों के बीच घोर युद्ध हुआ। पुत्र के चलाये हुये बाण से अत्यन्त घायल होकर अर्जुन मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पडा। पिता को मारा गया देख बभ्रुवाहन भी अचेत होकर गिर पडा। पति और पुत्र की दुरवस्था देखकर चित्राङ्गदा विलाप करती हुई पृथ्वी पर गिर पडी। आखिर उलूपी के प्रयत्न से संजीवनी मणि के द्वारा अर्जुन पुनरुज्जीवित हुआ। अर्जुन के पूछने पर उलूपी ने

उसके पराजय का रहस्य बताया। बभ्रुवाहन के साथ उलूपि और चित्राङ्गदा अश्वमेधयज्ञ में उपस्थित हुए। सुचारु रूप से धर्मराज का यज्ञ सम्पन्न हुआ। उसी समय एक आश्चर्यमय घटना घटित हुई। यज्ञ के सम्पन्न होने के समय वहाँ एक नकुल (नेवला) आया। उसने मनुष्यभाषा में कहा कि हे राजन्! तुम्हारा यज्ञ कुरुक्षेत्रनिवासी एक उञ्छवृत्तिधारी उदार ब्राह्मण के प्रस्थपरिमाण सत्तू दान करने के बराबर भी नहीं हुआ है। इस संदर्भ में नकुल (नेवल) प्रोक्त ब्राह्मण वृत्तान्त का वर्णन किया। हिंसारहित यज्ञ और धर्म का भी प्रस्ताव किया।

इसके बाद वैष्णवधर्मपर्व अधिकपाठ में दिखाई पडता है। इसमें २१ अध्याय हैं। अश्वमेधयज्ञ सम्पन्न होने के बाद युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से वैष्णवधर्म सुनने की इच्छा प्रकट की। श्रीकृष्ण के मुख से भागवत धर्मों का श्रवण करके ऋषि और पाण्डव प्रसन्न हुए। सब ने
नतमस्तक होकर भगवान् का प्रणाम किया। सब ऋषि प्रसन्नचित्त अपने अपने स्थान चले गये। भगवान् श्रीकृष्ण भी पाण्डवों को आशीर्वाद देकर द्वारका चले गये।

।। आश्वमेधिकपर्व कथासार समाप्त ।।